

कोट्टयम बीए की डिजिटल गृह पत्रिका रश्मि

(हिंदी पखवाडा विशेषांक 2021)

अंक 3

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय,
कोट्टयम बी ए

हिंदी पखवाडा उद्घाटन समारोह 2020





श्री षाजु सी एस, उपमंडल
इंजीनियर, चंगनाशेरी का पेंटिंग

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री.जी.एन.होवाल,आई.टी.एस
महाप्रबंधक दूरसंचार

उप संरक्षक

श्री.बिजुराज.एम.आर
उपमहाप्रबंधक(प्रशासन)
श्रीमती.अनिता.के
उपमहाप्रबंधक(वित्त)
श्रीमती.बिंदु एस
उपमहाप्रबंधक(एनडब्ल्यूपी)
श्रीमती.लता.एस
उपमहाप्रबंधक(विपणन)
श्रीमती.जेस्सी जोसफ
उपमहाप्रबंधक(पाला)

अध्यक्ष

श्री.कृष्णकुमार.जी
सहायक महाप्रबंधक(प्रशासन)

तकनीकी सहाय

श्रीमती नीता तोमस, उमंड, कंप्यूटर
श्री के.पी.प्रशांत, कदूअ(कंप्यूटर)
श्री नागराज जोगु कदूअ(कंप्यूटर,

संपादक मंडल

श्री.एम.पी.श्रीकुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
श्रीमती गीता.जी.पी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रश्मि

कोट्टयम बी ए की डिजिटल गृहपत्रिका

इस अंक में

संपादकीय	4
संदेश	5
कोट्टयम बी ए में राजभाषा कार्यान्वयन	6
संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए जाँच बिंदु	7
सितंबर 14- हिंदी दिवस क्यों	8
RIGHT TO INFORMATION ACT	9
ബഹിമ്യം (കഥ)	12
पैरालम्पिक खेल	18
मेरी प्यारी बेटी	20
सीमाएं देश, भाषा एवं धर्म की	21
योग के होनेवाले 5 फायदे	24
स्वामी विवेकानंद	25
माता की आशा(कविता)	27
ചിത്രശലഭം(കവിത)	28
बीए में संपन्न कुछ कार्यक्रमों की झलक	29
LGBT community	30
पेयिंटिंग - कुमारी कात्तु	31
पेयिंटिंग -श्री षाजु सी एस	32
हिंदी पखवाडा समापन समारोह 2020	33

संपादकीय

साथियों,

एक ओर सितंबर आ गया है। सितंबर महीना हिंदी के लिए और केरल वासियों के लिए महत्वपूर्ण है। 1949 सितंबर चौदह को हमारे भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। उसके यादगार में हर वर्ष सितंबर 14 को हिंदी दिवस के रूप में और बाद वाले पखवाड़े को हिंदी पखवाड़े के रूप में मनाया जाता है। अगस्त-सितंबर महीने में सभी केरल वासियां मिल जुलकर धूम धाम से ओणम मनाये जाते हैं। वास्तव में सितंबर माह एक उत्सव का महीना है। लेकिन पिछले डेढ़ सालों से पूरे विश्व में फैले हुए कोरोना महामारी के कारण लोगों को वित्तीय रूप से, शारीरिक एवं मानसिक रूप से के कई कठिनाइयों को सामना करना पड़ा। अब भी हम उससे पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हुआ है। इसके फलस्वरूप हमारे त्योहारों को भी उतना उत्साह और उमंग नहीं है। तो भी हम इस वर्ष में हिंदी पखवाड़ा और ओणम मनाने में पीछे नहीं गया है। लेकिन जाग्रता को छोड़ के बिना हिंदी पखवाड़ा समारोह के इस अवसर पर आपके सामने कोट्टयम बीएसएनएल की राजभाषा गृह पत्रिका डिजिटल रश्मि समर्पित कर रहे हैं। इसके बारे में सुझाव देना आपका कर्तव्य है। मुझे विश्वास है कि इस में जोड़े गए लेख, कविता, कहानी आदि आपको पसंद आएगी। अगले वर्ष में हमारे जगत एवं बीएसएनएल के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रार्थना करते हुए, हिंदी पखवाड़े की शुभकामनाएं देते हुए।



एम पी श्रीकुमार

सहायक निदेशक(राभा)

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय

बीएसएनएल, कोट्टयम

महाप्रबंधक का संदेश

साथियों,

आप सभी इस बात से सहमत होंगे कि रोज़मर्रा के कामकाजों में व्यस्त रहने के कारण आमतौर पर विचार, कला और साहित्य से जुड़ी रचनात्मक कार्यों की तरफ हम ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते हैं, या पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं। किन्तु इस वास्तविकता को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता कि साहित्य एवं अन्य कलाएं मानव जीवन को समृद्ध बनाने के लिए अतिआवश्यक होती हैं। ये न केवल मनोरंजन के साधन होते हैं, बल्कि हमारी थकान, उदासी और निराशा को मिटाकर, नई ऊर्जा उत्पादन करनेवाले बहुमूल्य स्रोत भी होते हैं। हमारी इस गृहपत्रिका 'रश्मि' के साथ भी यही उद्देश्य जुड़ा हुआ है।

कोरोना महामारी के परिणामस्वरूप उत्पन्न परिस्थितियों से अब हमारा देश और बीएसएनएल भी धीरे-धीरे उभर रहा है। अतः बीएसएनएल को प्रगतिपथ पर ले जाने के लिए हमें कड़ी मेहनत और लगन के साथ सभी कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से पूरा करने की आवश्यकता है। ऐसे में 'रश्मि' हमारे उत्साह और ऊर्जा को बनाए रखने में मददगार साबित होगी।

जिन अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपने लेख, कविताएं और अन्य रचनाओं तथा जानकारियों से इस गृहपुस्तिका को सजाया है उनका मैं अभिनंदन करता हूँ, और सभी से निवेदन करता हूँ कि इस पुस्तिका का भरपूर आनंद लें, और अपने रचनात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखते हुए जीवन को समृद्ध बनाएं।

शुभकामनाओं सहित,



जी.एन.होवाल

(जी.एन.होवाल)
महाप्रबंधक दूरसंचार
बीएसएनएल, कोट्टयम बीए

कोट्टयम बीए में राजभाषा कार्यान्वयन

सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ रहा है किंतु अभी भी काफी काम अंग्रेज़ी में हो रहा है। राजभाषा नीति का उद्देश्य है कि सामान्यतया सरकारी कामकाज में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग हो। वर्तमान युग में कोई भी भाषा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से जुड़ा हिना नहीं बन सकती। वर्तमान समय में कंप्यूटर ई-मेल वेबसाइट सहित सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाएं उपलब्ध होने से वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करना भी आसान हो गया है।

हर साल जैसे हमारे बीए ने भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों की पूर्ति की गई है। पत्राचार की प्रतिशतता, फाइलों में टिप्पण की प्रतिशतता आदि में प्रगति पाई है। इसके अलावा समय-समय पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें तथा कार्यशालाएं आयोजित कर रहे हैं। बीए इन्ट्रानेट में हर दिन एक हिंदी शब्द अंग्रेज़ी समानार्थ के साथ दे रहे हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यकलापों में भी सक्रिय रूप में भाग लेते हैं। साध्य सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड की सुविधा उपलब्ध करवाए हैं। हिंदी पखवाड़े के अवसर पर राजभाषा संबंधित अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित कर रहे हैं।

हर साल हिंदी पखवाड़े के दौरान डिजिटल राजभाषा गृह पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं। इस साल राजभाषा से संबंधित सांविधिक उपलब्धों सहित अधिनियम, नियम, नमूना पत्र, टिप्पण, आदि मिलाकर एक डिजिटल अक्षरसाथी नाम की पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। ऐसे हमारे बी ए में राजभाषा कार्यान्वयन सफल रूप में करने के लिए सभी तरह के प्रयास कर रहे हैं।

As early as possible – यथाशीघ्र

As far as possible – यथासंभव

As far as practicable – यथासाध्य

As required - यथा अपेक्षित

As proposed - यथा प्रस्तावित

As the case may be - यथा स्थिति

As a matter of fact - यथार्थत

As amended - यथा संशोधित

As modified - यथा आशोधित

In course of time - यथा समय

संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए संचार और सूचना मंत्रालय से प्राप्त जांच बिंदुओं पर ध्यान दें।

1. हमारे प्रयोग में आनेवाले सभी अधिनियम, नियमावली, कोड,, मैनुअल , प्रक्रिया साहित्य आदि को द्विभाषी रूप में मुद्रण करें।
2. फार्म, पत्र-शीर्ष, रजिस्टर, फाइलें, मुलाकाती पत्र, परिचय पत्र, मानक मसौदे, रोकड बही आदि का मुद्रण द्विभाषी रूप में तैयार करें।
3. यह सुनिश्चित किया जाए कंप्यूटर तथा अन्य यांत्रिक उपकरणों में हिंदी सॉफ्टवेयर उपलब्ध करवाया जाए।

राजभाषा अधिनियम , 1963 की धारा 3(3) में उल्लिखित सभी दस्तावेज़ जैसे सामान्य आदेश, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियाँ, परिपत्र, करार, लाइसेंस, परमिट, टेंडर के फार्म और नोटिस, संकल्प, नियम तथा प्रशासनिक रिपोर्ट आदि हिंदी तथा अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में जारी होने चाहिए ।

4. राजभाषा नियम 1963 की धारा 3(3) में विनिर्दिष्ट सभी दस्तावेज़ों के लिए हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में तैयार करें तथा ऐसे दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारी का दायित्व है कि यदि ऐसे दस्तावेज द्विभाषी रूप में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।
5. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों की राज्य सरकारों को भेजे जानेवाले पत्र हिंदी में या हिंदी अनुवाद के साथ प्रेषित करें।
6. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों को भेजे जानेवाले पत्रों के लिफाफों पर पते देवनागरी लिपि में ही लिखें तथा 'ग' क्षेत्र में जानेवाले लिफाफों के पते रोमन में लिखे जाएं।
7. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में स्थित सरकार के कार्यालयों में रबड की मोहरें, नामपट्ट, पत्रशीर्ष, सील, विजिटिंग कार्ड, बाड्ज, लोगो, चार्ट आदि द्विभाषी रूप में बनवाएं तथा ग क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में त्रिभाषी रूप में बनवाएं जाएं।
8. 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में रखे जानेवाले रजिस्टरों और सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियाँ हिंदी में की जाएं। ग क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में ऐसी प्रविष्टियाँ यथासंभव हिंदी में की जाएं।
9. यदि किसी कर्मचारी को हिंदी में एक पत्र मिले हैं तो उसका उत्तर हिंदी में ही दिया जाएं।

10. हिंदी में प्राप्त आवेदन, अपील और अभ्यावेदन में हिंदी हस्ताक्षर किए गए हैं तो उसका उत्तर हिंदी में दिया जाना है ।

11. 'क' और 'ख' तथा ग क्षेत्र में समाचार पत्रों में हिंदी में जारी किए जानेवाले विज्ञापनों पर खर्च किसी भी स्थिति में अंग्रेज़ी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में किए गए कुल खर्च से कम न हो।

12. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को तथा 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को और 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को हिंदी में किए जानेवाले मूल पत्राचार क्रमशः 100 प्रतिशत, 100 प्रतिशत और 65 प्रतिशत के लक्ष्य के अनुसार किया जाए।

13. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों की राज्य सरकारों के साथ पत्राचार अनिवार्य रूप से पत्राचार हिंदी में किए जाए।

14. 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित किए गए कार्यालय कृपया यह सुनिश्चित करें कि राजभाषा नियम 8(4) के अनुसार हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारी /कर्मचारी यथासंभव अपना शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में करें। साथ ही ऐसे कार्यालयों में कुछ अनुभागों को अनिवार्य रूप में हिंदी में कार्य करने के लिए विनिर्दिष्ट किया जाए।

15. कृपया यह सुनिश्चित करें कि यदि कार्यालय के 80 प्रतिशत से अधिक लोग हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है तो उस कार्यालय को राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित करें।

16. कार्यसाधक ज्ञान न प्राप्त कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना के अधीन प्रबोध/प्रवीण /प्राज्ञ प्रशिक्षण दिलाया जाए।

17. हिंदी टंकण तथा आशुलिपि में रोस्टर बद्ध करके एक समयबद्ध कार्यक्रम के अनुसार प्रशिक्षण दिलाया जाए।

18. प्रशिक्षण प्राप्त, कार्यशाला में भाग लिए अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा हिंदी में कार्य निष्पादन सुनिश्चित करें।

19. राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य और अध्यक्ष अपना अधिकांश कामकाज हिंदी में करें ।

उपर्युक्त सभी कार्यों का निष्पादन की जिम्मेदारी राजभाषा नियम 12 के अनुसार कार्यालय के प्रशासनिक अधिकारी पर निर्भर है । ये सभी मदों के लिए जाँच बिंदु बनाएं ताकि समय समय पर राजभाषा अनुभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन कर सकें।

RIGHT TO INFORMATION ACT 2005

The Right to Information ACT (RTI) is an act of the Parliament of India which sets out the rules and procedures regarding citizens' right to information. It extends to the whole of India. It replaced the former Freedom of Information Act, 2002. Earlier this act was in force except in the State of Jammu & Kashmir. But on 5th August 2019, after revocation of the Article 370 J & K came under the RTI Act.

RTI Act of Parliament received the assent of the President on the 15th of June 2005. This was published in the Gazette of India under Extraordinary category on 21st June 2005 by the Ministry of Law and Justice. (Legislative Department) It is an Act to provide for the setting out the practical regime of right to information for citizens to source access to information under the control of public authorities in order to promote transparency and accountability in the working of every public authority, the constitution of a Central Information Commission and State Information Commission and for matter connected therewith or incidental thereto. Under the provisions of RTI Act, any citizen of India may request information from a 'public authority (A body of Government or Instrumentality of State) which is required to reply expeditiously or within 30 days of the receipt of the request. If the case of matter the petitioner's life and liberty, the information has to be provided within 48 hours.

Information under this act means any material in any form, including records, documents, memos, E-mails, opinions, advices, press releases, circulars, orders, log books, contracts, reports, papers, samples, models, data materials held in any electronic form and information relating to any private body which can be accessed by a public authority under any other law for the time being.

Right to Information means the right to information accessible under this Act which is held by or under the control of any public authority which includes the right to

- (1) inspection of work, documents, records;
- (2) Taking notes, extracts or certified copies of documents or records,
- (3) Taking certified samples of material;

(4) Obtaining information in the form of diskettes, floppies, tapes, video cassettes or in any other electronic mode or through printouts where such information is stored in a computer or in any other device. This Act requires

every public authority to computerize this records for wide disseminations and to productively publish certain categories of information so that the citizens need minimum resort to request for information

A citizen has the right to seek information contained in file noting and no file would be complete without note.

Every public authority shall have Central Public Information Officers or State Public Information Officers as the case may be necessary to provide information to persons requesting for the information under this Act.

At present, the fee for requesting information through an application is Rs 10/-. No such fee shall be charged from the persons who are of below poverty line as may be determined by the appropriate Government.

If a request has been rejected the CPIO should communicate the reasons for rejection, the period within which an appeal against such rejection and the particulars of the appellate authority to the applicant.

Items that exempted from disclosure of information.

- a) That may affect the sovereignty and integrity of India, state's security, strategic or economic interests , relation with foreign state or that will lead to the incitement of an offence.
- b) Information including commercial confidence, trade secrets or intellectual property, the disclosure of which would harm the competitive position of a third party, unless the competent authority is satisfied that larger public interest warrants the disclosure of such information.
- c) Forbidden to be published by any court.

- d) Which will cause breach of privilege of Parliament or Legislature.
- e) Confidential report from foreign Government.
- f) Which would endanger the life or physical safety of any person.
- g) Which would impede the process of investigation or prosecution of offenders etc

The Central Information Commission shall consist of (1) The Chief Information Commissioner and Central/ State Information Commissioners not exceeding 10. Both are appointed by the President/Governor on recommendation of a committee. The Central officers are elected by a committee consisting of the Prime Minister, Leader of Opposition of Lok Sabha and the Union Cabinet Minister nominated by the Prime Minister.

The Headquarters of the Central Information Commission shall be at Delhi. His term of this post is 5 yrs and the age should not be above 65yrs and shall not be eligible for reappointment.

Appeal: 1. Any person who does not receive a decision within the time specified or aggrieved by a decision of the CPIO , as the case may be, may within 30 days from the expiry of such period or from the receipt of such a decision prefer an appeal to such officer who is senior in rank to the CPIO in each public authority.

2. If the appeal is to disclose a third party information, the appeal by the concerned third party shall be made within 30 days from the date of order.

3. A second appeal against the decision shall lie within ninety days from the date on which the decision should have been made or was actually received, with the CPIO.

Penalties : If the request is rejected without any reasonable cause, refused to receive the application for information or has not furnished the information within the time specified or denied the request or knowingly given incorrect, incomplete or misleading information or destroyed information in the request, it shall impose a penalty of two hundred and fifty rupees each day till application is received or information is furnished, so however , the total amount of such penalty shall not exceed Rs.2500/-

Right to Information Act empowers Indian Citizens to seek any accessible information from a Public Authority and makes the Government and its functionaries more accountable and responsible. This Act is intended to promote transparency and accountability in the working, contain corruptions in the working, contain corruptions work for the people in real sense. An informed citizen is better equipped to keep necessary vigil on the instruments of governance. And this Act is a step towards the citizens informed about the activities of Government.

Elizabeth Julie George,
AGM(Legal)

सितंबर 14 को हिंदी दिवस क्यों चुने

श्री व्यौहार राजेन्द्र सिंह, (Beohar Rammanohar Sinha) हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार थे, जिन्होंने हिन्दी को भारत की राजभाषा बनाने की दिशा में अतिमहत्वपूर्ण योगदान दिया। फलस्वरूप उनके **50 वें जन्मदिन** के दिन ही, अर्थात् **14 सितम्बर 1949** को, हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए हजारीप्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरणगुप्त, महादेवी वर्मा, सेठ गोविन्ददास, काका कालेलकर, आदि साहित्यकारों को साथ लेकर व्यौहार राजेन्द्र सिंह ने अथक प्रयास किए।



ബലിമൃഗം

സന്ധ്യാസമയം... ഭാവനയുടെ ലോകത്തേക്കുള്ള ജാലകം അതിവിശാലമായി തുറന്നിട്ടിരിക്കുന്ന സമയം.



നമുക്ക് ആ ലോകത്തേക്ക് ഒന്ന് പ്രവേശിക്കാം അതിമനോഹരമാണ് ആ ലോകം നമ്മുടെ മനസ്സിന്റെ ആഗ്രഹത്തിന് മൊത്തം ആ ലോകത്തിന് മാറ്റം വരുന്നു. ഇന്ന് ഇത്ര നല്ലൊരു സമയത്ത് ഈശ്വരസാന്നിധ്യം അറിയുന്ന ഈ സമയത്ത് നമുക്ക് സഞ്ചരിക്കാം ആ ഭാവനയുടെ ലോകത്തിലൂടെ. വെണ്ണക്കല്ലിൽ തീർത്ത അതിമനോഹരമായ കൊട്ടാരത്തിന് മുൻപിൽ ഒരു വൻ കവാടമുണ്ട്. അത് സൂക്ഷിച്ചു നോക്കിയാൽ മനസ്സിലാക്കുവാൻ സാധിക്കും. അത് മെല്ലെ തുറക്കുകയാണ്. വരൂ, വേഗം വരൂ നമുക്ക് ഭാവനയുടെ ലോകത്തേക്ക് പ്രവേശിക്കാനുള്ള സമയം ആയി.

പക്ഷേ പ്രവേശിച്ചപ്പോഴേക്കും മരണമുകുത. ആരുടെയോ തേങ്ങൽ ആ അന്തരീക്ഷത്തിൽ തളം കെട്ടി നിൽക്കുന്നു

ആരുടെതാവാം അത്.....

കവാടത്തിനു ഉള്ളിൽ കടന്ന് ഞാൻ അതിസൂക്ഷ്മമായി തേങ്ങൽ ശ്രവിച്ചു. ഞാൻ കേൾക്കുന്നു അതൊരു കൊച്ചുപെൺകുട്ടിയുടെ കരച്ചിലാണ് ഞാൻ പിന്തിരിഞ്ഞു നോക്കി. എന്നോടൊപ്പം ഭാവനാലോകത്തേക്ക് പ്രവേശിച്ചവർ ഈ അന്തരീക്ഷത്തെ ഭയന്ന് പിന്തിരിഞ്ഞിരിക്കുന്നു ഞാൻ ഞാനതോർമ്മിച്ചില്ല എനിக்கும் അവർക്കൊപ്പം പോകണം ഞാൻ തിരിഞ്ഞോടി.

പക്ഷേ കവാടം എന്നെ ഭാവനാലോകത്തെ തനിച്ചാക്കി അടഞ്ഞിരുന്നു. തേങ്ങലിന്റെ ഉറവിടം തേടി പോകണമെന്ന് എന്നെ ആരോ പ്രേരിപ്പിക്കുന്നു എന്ന തോന്നൽ ഞാൻ തീരുമാനിച്ചിരിക്കുന്നു അവിടെ തേടി പോവുക തന്നെ. ഈ തോന്നലിൽ പത്രപ്രവർത്തകനും ഒരല്പം സാഹിത്യ വാസനയുള്ള മനുഷ്യൻ എന്ന മനു പുതപ്പാടമെന്ന അതിമനോഹരമായ ഗ്രാമത്തിലേക്ക് യാത്ര പുറപ്പെട്ടു. അയാൾക്ക് മൂന്നും പിന്നും നോക്കുവാൻ ഉണ്ടായിരുന്നില്ല കാരണം ജീവിതഭാരം ചുമലിലേറ്റുന്ന ഒരു കുടുംബസ്ഥൻ ആയിരുന്നില്ല. അയാൾ സർവ്വവിധ സ്വാതന്ത്ര്യവുമുള്ള ഒരു അവിവാഹിതൻ സ്വന്തമായി നല്ലൊരു കാഴ്ചപ്പാടുള്ള നല്ലൊരു വ്യക്തി. പുതപ്പാടം എന്ന പ്രദേശം അയാൾക്ക് അന്യമായിരുന്നു. അവിടെ നിന്നുയരുന്ന ആ തേങ്ങൽ അത് അയാളിൽ ഉണ്ടാക്കിയ ഉൾവിളി അതായിരുന്നു അയാളെ ആ പ്രദേശത്ത് എത്തിച്ച ഘടകം

ആ കൊച്ചു പെൺകുട്ടി, മീനാക്ഷി കൂവളത്തിലയുടെ കണ്ണുകളോട് കൂടിയ എട്ടുവയസ്സുകാരിയായിരുന്നു ആ തേങ്ങലിനുറവിടം. ബസ്സിറങ്ങി അടുത്തുകണ്ട ചായക്കടയിലേക്ക് നടന്നു. പ്രഭാതത്തിൽ ചൂടുചായ തേടിയെത്തി. പറ്റ് പറഞ്ഞ് പോന്ന സ്ഥിരം പറ്റുപടിക്കാരുടെ തിരക്കിൽ നിന്ന് നട്ടംതിരിയുന്ന ചായക്കടയുടെമേ. കട തുറന്നു മണിക്കൂറൊന്നായിട്ടും എത്താത്ത സഹായിയെ പഴിച്ചു കൊണ്ടാണ് അയാൾ ചായ ഇടുന്നത്. മനു മെല്ലെ ചായക്കടയിലേക്ക് കയറിയിരുന്നു ഈ പ്രദേശത്ത് പുതിയതാ അല്ലേ എന്ന ഭാവത്തിൽ എല്ലാവരും മനുവിനെ തുറിച്ചുനോക്കി. കടയുടെ ഉടൻതന്നെ മനുവിന്റെ അടുത്തെത്തി. 'കടുപ്പത്തിൽ ഒരു ചായ എടുക്കട്ടെ'. ഞ്ഹും. മനു മൂളി.

'ഇവിടെ പുതിയതാണല്ലോ?' 'അതേ ഞാൻ മീനാക്ഷി എന്ന പെൺകുട്ടിയെ...' 'ഓ നമ്മുടെ പുതപ്പാടം പീഡനം അതിനെ കണ്ടിട്ടെന്തിനാ? വല്ല വാർത്ത കൊടുക്കാൻ ആണോ?'

കൂട്ടത്തിലൊരാൾ ചോദിച്ചു 'ഇനിയെന്നാ വാർത്ത കൊടുക്കാനാ ...? ചാനലായ ചാനലും, പത്രങ്ങളായ പത്രങ്ങളും അത് കൊട്ടിഘോഷിച്ചില്ലേ...?' 'കടയുടെ പറഞ്ഞു 'കൊട്ടിഘോഷിച്ചാലെന്നാ. നമുക്കൊക്കെ വായിക്കാൻ നല്ലൊരു വാർത്ത കിട്ടിയില്ലേ'

'അതെ അതെ പോലീസിൽ ചോദ്യംചെയ്തൽ അല്ലേ ലൈവ് ആയി കാണാനൊത്തു'.

അസഹനീയമായ സംഭാഷണം എത്ര സുന്ദരമായ ഗ്രാമത്തിലും മൂശേട്ട കടന്നു കൂടിയോ?

അയാൾ നടന്നു വഴിയിൽ ആരോടോ ചോദിച്ചു പുതപ്പാടത്തെ പഞ്ചായത്ത് പ്രസിഡൻറിന്റെ വീട്ടിലേക്ക് നടന്നു. യാതൊരുവിധ മുൻവിധിയും ഇല്ലാതെ ഒരു പ്രദേശത്തും ചെന്നെത്തിപ്പെടാൻ പാടില്ല എന്ന് മനസ്സിലായി.

നടന്ന വഴി ഒരു ഭ്രാന്തനെ കണ്ടുമുട്ടാൻ ഇടയായി അതിവിചിത്രമായ പെരുമാറ്റം. നടക്കുന്ന നേരത്തൊക്കെ പലതരത്തിൽ അയാൾ പെരുമാറുന്നു. ചിലപ്പോൾ അതിമനോഹരമായി മഹാകവികളുടെ കവിതകൾ ചൊല്ലുന്നു. ചിലപ്പോൾ നിശബ്ദമാകുന്നു. ചിലപ്പോൾ പലരെയും വിമർശിക്കുന്നു. കൂവും കൂക്കുവിളികളും ആയി ശബ്ദമുണ്ടാക്കുന്നു. ഇത്തരം പെരുമാറ്റം ആവാം അതുവഴി കടന്നുപോയ ഒരു കൂട്ടം കുട്ടികൾ അദ്ദേഹത്തെ ഭ്രാന്തൻ എന്ന് വിളിക്കാൻ കാരണമായത്.

2 മൈൽ മുൻപോട്ടു നടന്നു പൊടുന്നനെ കണ്ടു. പടിപ്പുരയോടു കൂടിയ നാലുകെട്ട്. നമ്പൂരി പറമ്പിൽ എന്ന വീട്ടുപേര് പടിപ്പുരയുടെ ഒരു സ്ഥലത്ത് കരികൊണ്ട് എഴുതിയിരിക്കുന്നു. അയാൾ അവിടേക്ക് പ്രവേശിച്ചു ആരോ ഒരാൾ പൂമുഖത്തെ ചാറുകസേരയിൽ ചാരിയിരുന്ന് കേരളശബ്ദം വായിക്കുന്നു.

കാൽപ്പെരുമാറ്റം കേട്ടിട്ടാവണം അദ്ദേഹം മുഖമുയർത്തി നോക്കി ചെറുതായി നര കയറിയിരിക്കുന്നു. കാലം പകർന്ന അറിവ് അദ്ദേഹത്തിന്റെ കണ്ണുകളിൽ തെളിഞ്ഞു നിന്നിരുന്നു. ഒരു ചെറു പുഞ്ചിരിയോടെ കൂടിയാണ് അദ്ദേഹം മനുവിനെ വരവേറ്റത്. വാസുദേവൻ നമ്പൂതിരി പ്രസിഡൻറ് എന്നുള്ളത് ചുരുക്കി ചിലർ അദ്ദേഹത്തെ 'പ്രാസു' എന്ന് കളിയാക്കി വിളിച്ചിരുന്നു ഇതെല്ലാം ആ വഴിപോക്കനിൽ നിന്നുള്ള അറിവാണ്. സമൃദ്ധിയുടെ കാലത്തെ ഓർമ്മകൾ അയവിറക്കി ആയിരുന്നു അതിലെ രണ്ട് അന്തേവാസികളും, അദ്ദേഹവും അദ്ദേഹത്തിന്റെ അമ്മയും

. 'ആരാണു് എന്താണു് വേണ്ടത്?' എന്നുള്ള ചോദ്യം കേട്ടാണ് അയാൾ ചിന്തയിൽ നിന്നും ഉണർന്നത്.

ഞാൻ മനുശങ്കർ. 'കേരളശബ്ദം' എന്ന ദിനപത്രത്തിനു വേണ്ടി പ്രവർത്തിക്കുന്നു ഒരു പത്രപ്രവർത്തകനാണ്. കൂട്ടത്തിൽ അല്പം സാഹിത്യവാസന. ഞാൻ മീനാക്ഷി എന്ന കൊച്ചു പെൺകുട്ടിയെ കാണാൻ വന്നതാണ്. അവളെ അറിയാമെന്നു തോന്നുന്നു. 'എന്തിനാ അവളെ കാണുന്നത് നേരിട്ട് അഭിമുഖം എടുക്കാനാണോ?'

എന്താണ് സംഭവിച്ചത്? എങ്ങനെയാണ്? എപ്പോഴാണ്? എന്തെല്ലാം അറിയണം? ഇത് വാർത്തയാക്കി തനിക്ക് പ്രശസ്തൻ ആവുകയും ചെയ്യാം. 'അങ്ങനെ തെറ്റിദ്ധരിച്ചിരിക്കുന്നു ഞാൻ അത്തരത്തിലുള്ള പത്രപ്രവർത്തകൻ അല്ല. എവിടുനോ ഉള്ളിൽ തറക്കുന്ന ഒരു തേങ്ങൽ. ആ തേങ്ങലിൻ ഉറവിടം തേടിയുള്ള യാത്രയാണ് എന്നെ ഇവിടം വരെ കൊണ്ടെത്തിച്ചത്. അവളെ കുറിച്ച് അറിയേണ്ടതെല്ലാം അറിഞ്ഞ് അവളെ സഹായിക്കണം എന്നാണ് എന്റെ തീരുമാനം.'

'നിങ്ങളുടെ മനസ്സ് നമ്മനിറഞ്ഞതാണെന്ന് തോന്നുന്നു. വരു അങ്ങോട്ട് മാറി നിന്ന് സംസാരിക്കാം.' 'ശരി' വെറും എട്ടു വയസ്സുള്ള കുസൃതിനിറഞ്ഞ കണ്ണുകളും സദാസമയവും പുഞ്ചിരിക്കുന്ന ആ കൊച്ചു കുഞ്ഞിനെ ആർക്കും എടുക്കാൻ തോന്നും അവളെ എല്ലാവരും സ്നേഹിച്ചിരുന്നു. അമ്മയുടെ കൈപിടിച്ച് ഭഗവാനെ തൊഴാൻ വരുന്ന അവളെ കാണാനാവും ഭഗവാൻ പോലും ആദ്യം ആഗ്രഹിക്കുക അത്ര മിടുക്കിയായിരുന്നു പഠനത്തിലും കലാപരമായ കഴിവുകളിലും. അച്ഛനുമമ്മയ്ക്കും അല്പം താമസിച്ചു ഉണ്ടായ സന്തതി. മീനാക്ഷി. അവളെ അറിയാത്ത ഒരു മൺതരിപോലും ഈ ഗ്രാമത്തിൽ ഇല്ല. അവൾക്കൊരു ചേച്ചിയുണ്ട്. മൈമിലി. കാണാൻ അതിസുന്ദരി എന്നാൽ ബുദ്ധിവൈഭവത്തിലും കലാപരമായ കഴിവിലും മീനാക്ഷിക്ക് മുൻപിൽ അവൾ ഒന്നും ആയിരുന്നില്ല. അതിൽ മൈമിലിയ്ക്ക് മീനാക്ഷിയോട് അല്പം അസൂയ ഉണ്ടായിരുന്നു എന്ന് കൂട്ടിക്കാളൂ. കുഞ്ഞുങ്ങളുടെ കാര്യത്തെക്കുറിച്ച് യാതൊരു ചിന്തയും അലട്ടാത്ത മാതിരി അവരുടെ അച്ഛൻ കള്ളുഷാപ്പിൽ ഇനിയുള്ള ജീവിതം അവിടെ ആഘോഷിക്കാം എന്ന നിലയിൽ കഴിയുന്നു. പണിയെടുത്ത് മോളെ പോറ്റാൻ കഷ്ടപ്പെടുന്ന മണിയമ്മ എന്ന ഇവരുടെ അമ്മ. ജീവിതം ദാരിദ്ര്യത്തിലാണെങ്കിലും അതൊന്നും എട്ടുവയസ്സുകാരി കുട്ടിയെ അവളുടെ പുഞ്ചിരിയിൽ നിന്നും അകറ്റി നിർത്തിയില്ല. അവളുടെ കുസൃതിത്തരങ്ങൾ മുഴുവൻ അവൾ ചിലവാക്കിയിരുന്നത് അവളുടെ മാഷിന്റെ അടുത്തായിരുന്നു ദിനേശ്. അവൾക്ക് എല്ലാ ദീച്ചർമാരെയും ഇഷ്ടമാണെങ്കിലും ഏറ്റവും ഇഷ്ടമുള്ളത് ദിനേശ് മാഷിനെ ആയിരുന്നു. അവളുടെ കുസൃതിത്തരങ്ങൾ ആ സ്കൂൾ മുഴുവൻ ആസ്വദിച്ചിരുന്നു. എങ്കിലും അവളെ ഏറ്റവും കൂടുതൽ സ്നേഹിച്ചിരുന്നത് ദിനേശ് മാഷായിരുന്നു. എന്നാൽ അയാളുടെ ഉള്ളിൽ ഒളിഞ്ഞിരുന്ന കീചകനെ ആരും തിരിച്ചറിഞ്ഞില്ല. അയാളുടെ പെരുമാറ്റത്തിൽ ഉയർന്നുവന്ന വ്യത്യാസം ആരാലും ശ്രദ്ധിക്കപ്പെട്ടില്ല.

കടുത്ത മഴയുള്ള ഒരു ദിവസം ഒന്നുമറിയാത്ത ആ പാവം കുട്ടി അയാളുടെ ഇരയായി. അയാളുടെ മുന്നിൽ അവളുടെ ചെറുത്തുനിൽപ്പുകൾ ബലഹീനം ആയിരുന്നു. മണിയമ്മയോട് മീനാക്ഷി എല്ലാം തുറന്നു

പറഞ്ഞു. വൈകാതെ വാർത്ത നാടു മുഴുവൻ പാട്ടായി. അപ്പോഴും മീനാക്ഷിക്ക് വിഷമം തോന്നിയില്ല. ആ സമയത്ത് അവളുടെ മുഖത്തുനിന്നും പുഞ്ചിരി മാഞ്ഞു പോയിരുന്നില്ല. എന്നാൽ എന്നാൽ പോലീസെത്തി നാലാൾ കാൺകെ അവൾ ചോദ്യം ചെയ്യപ്പെട്ടു. നാട്ടുകാർ മുഴുവനും അവളെ മറ്റൊരു കണ്ണുകൊണ്ട് നോക്കുവാൻ തുടങ്ങി എല്ലാവരും അവളെ പുച്ഛഭാവത്തിൽ നോക്കുവാൻ തുടങ്ങി. ദിനേശ് അറസ്റ്റ് ചെയ്യപ്പെട്ടു. നാട്ടുകാർ തന്നെ ഈ വാർത്തയ്ക്ക് പ്രോത്സാഹനം നൽകി.

എല്ലാം ക്ഷമിക്കാൻ കഴിയുന്ന തെറ്റുകൾ ആയിരുന്നു. എന്നാൽ ഏറ്റവും കൊടുംപാതകം അതൊന്നുമായിരുന്നില്ല.

മീനാക്ഷി ഒരു നാളെ കഴിഞ്ഞ് സ്കൂളിൽ പോയി. അവിടെ അവളുടെ അധ്യാപകർ ഉൾപ്പെടെ അവളെ ഒരു കാഴ്ചവസ്തുവിനെ പോലെ കണ്ടിരുന്നു അവർ അവളോട് പെരുമാറിയതും അതേരീതിയിൽ ആയിരുന്നു.

അതുവരെ തനിക്ക് വന്നുണ്ടെന്തെ ദുർഗതി ഓർത്ത് അവൾ കരഞ്ഞിട്ടുണ്ടായിരുന്നില്ല. അവളുടെതെറ്റ് കൊണ്ട് അല്ലാതെ സംഭവിച്ച ആ മഹാവിപത്ത് അവളെ ഇല്ലാതാക്കി. അവൾ പതിയെ മാറുവാൻ തുടങ്ങി. അവൾ ആരോടും മിണ്ടാതായി ഇന്ന് അവളുടെ ഒരു ചെറു തേങ്ങൽ മാത്രമാണ് അവളിൽ നിന്നുയരുന്ന ശബ്ദം.

കഷ്ടം. ഈശ്വരൻ ഇങ്ങനെയൊരു വിധി ആയിരുന്നല്ലോ അതിനായി കാത്തു വെച്ചത്. തന്റെ നേരെ തിരിഞ്ഞ അദ്ദേഹത്തിന്റെ കണ്ണുകൾ ഈറനണിഞ്ഞിരുന്നു.

നേരം സന്ധ്യ ആയിരിക്കുന്നു. എവിടെ താമസിക്കും എന്ന ചിന്ത ആ നേരമാണ് മനസ്സിലേക്ക് വന്നത്. അദ്ദേഹം എല്ലാം മനസ്സിലാക്കിയിട്ട് എന്ന പോലെ എനിക്ക് നാലുകെട്ടിന് ചേർന്നുള്ള ചാവടിയിൽ താമസം ഒരുക്കിത്തന്നു. കൂടാതെ ഭക്ഷണവും.

ജനങ്ങളുടെ മനസ്സിൽ നന്മയും സ്നേഹവും നിറഞ്ഞ നല്ലവനായ മനുഷ്യൻ പ്രിയപ്പെട്ടവനാണ് എന്നതിൽ യാതൊരു സംശയവുമില്ല.

നാളെ മീനാക്ഷിയെ കാണുവാൻ പോകുന്നു. അദ്ദേഹം ഒപ്പം വരുമെന്നറിയിച്ചു. മനസ്സ് ആ കൊച്ചു പെൺകുട്ടിയുടെ കഥ കേട്ട് വിങ്ങുന്നു. നാളെ എന്താണ് സംഭവിക്കുക?

പ്രിയപ്പെട്ട ഡയറി ഇന്ന് എനിക്ക് ഉറങ്ങാൻ കഴിയുമെന്ന് തോന്നുന്നില്ല.

‘ഉം’ ശബ്ദം കേട്ടു തിരിഞ്ഞു നോക്കി. വാസുദേവൻ നമ്പൂതിരിയാണ്. ഇല്ലത്തെ ഭക്ഷണമൊക്കെ പിടിച്ചോ ആവോ .. ഭക്ഷണകാര്യത്തിൽ എനിക്ക് നിർബന്ധമൊന്നുമില്ല.’ അദ്ദേഹം ചോദിച്ച ചോദ്യത്തിന് ഉത്തരമെന്നവണ്ണം മനു പറഞ്ഞു.

രാവേറെയായിട്ടും ആ കൊച്ചു പെൺകുട്ടിയുടെ ഓർമ്മ അയാളെ ഉറങ്ങുവാൻ അനുവദിച്ചില്ല.

നേരം പുലർന്നു. പ്രഭാത ഭക്ഷണം പോലും ഒഴിവാക്കി മനു അദ്ദേഹത്തോടൊപ്പം മീനാക്ഷിയുടെ വീട്ടിലേക്ക് നടന്നു. പച്ചപ്പ് നിറഞ്ഞ നിറഞ്ഞ കാലാവസ്ഥ പ്രകൃതി ഒന്നാകെ ഉറങ്ങുകയാണ് എന്ന മനുവിന് തോന്നി. നടക്കുമ്പോൾ തന്നെ അകലെ സ്ഥിതി ചെയ്യുന്ന ആ കൊച്ചു കുട്ടിക്ക് അയാളുടെ കണ്ണിൽ പെട്ടു. വീട്ടുമുറ്റത്തേക്ക് കടന്ന മനുവിന് അന്തരീക്ഷം മരണമുകുത നിറഞ്ഞതാണ് എന്ന് തോന്നി. വാസുദേവൻ നമ്പൂതിരി അകത്തേക്ക് നോക്കി വിളിച്ചു മണിയമ്മേ... ഉടൻ തന്നെ മുഷിഞ്ഞ സാരിയടുത്ത് 50 വയസ്സ് തോന്നിക്കുന്ന സ്ത്രീ വീട്ടിനകത്തു നിന്നും പുറത്തേക്ക് വന്നു എണ്ണമയമില്ലാത്ത മുടി വാരിവലിച്ച് കെട്ടിവെച്ചിരിക്കുന്നു ധൂതിയിൽ പണിയിലായിരുന്നു എന്ന് അവരുടെ മുഖത്ത് നിന്നും മനസ്സിലാക്കിയെടുക്കാൻ സാധിച്ചിരുന്നു. ‘എന്താ സാറേ ഇത് ആരാ കൂടെ?’ ‘മണിയമ്മേ പത്രപ്രവർത്തകനാ. “ഓ....ഇയാളെ വിളിച്ചോണ്ട് എന്തിനാ സാറേ ഇങ്ങോട്ട് വന്നത് പത്രത്തിൽ വാർത്ത കൊടുക്കാൻ അല്ലാതെ ഇവിടെ ഉള്ളവരുടെ അവസ്ഥ എന്താണെന്ന് ഇവർക്കൊക്കെ എങ്ങനെ മനസ്സിലാവാൻ ആ കല്യാണ പ്രായം ചെന്ന ഒരു പെണ്ണുണ്ട് അതിനെയെങ്ങനെ ഒരുത്തൻ കെട്ടി കൊണ്ടുപോകുന്നത്? എനിക്ക് ജനിച്ച ഒരു സന്താനം എല്ലാം നശിപ്പിച്ചില്ലേ’ ‘മണിയമ്മേ.... അവൾ കുട്ടി അല്ലേ. അവൾ എന്തറിഞ്ഞിട്ടാണ്?’

‘ഓ ഒരു കുട്ടി മൈമിലിയെക്കാളും അതിയാനിഷ്ടം അവളോടാ. ഓ.. അവൾ ഇപ്പോൾ ഈ കുടുംബത്തിന്റെ അടിവേരിളക്കും’.

ഇവർ തന്നെയാണോ ആ കുട്ടിയുടെ അമ്മ അവർക്ക് തീരെ വിദ്യാഭ്യാസവും വിവരവും ഇല്ല എന്ന് മനസ്സിലായി. മനു വീടിന്റെ അകത്തേക്ക് നടക്കുമ്പോൾ ചിന്താമഗ്നനായി. വാസുദേവൻ നമ്പൂതിരി മനുവിനെയും കൂട്ടി അകത്തേക്ക് നടന്നു. ചാരിയിട്ടിരുന്ന ഒരു ഇരട്ടുമുറിയിലേക്ക് അവർ പ്രവേശിച്ചു. അവളെ, മീനാക്ഷിയെ, അടച്ചിട്ടിരുന്ന മുറി അതായിരുന്നു. ആ മുറിയിലാകെ അവളുടെ തേങ്ങൽ നിറഞ്ഞു നിന്നിരുന്നു. അടഞ്ഞു കിടന്നിരുന്ന ജനാല തുറന്ന മാത്രയിൽ കണ്ടു. മുഖം ഭിത്തിയിലേക്ക് ചേർത്തുപിടിച്ച് നിർത്താതെ കരയുന്ന ഒരു കൊച്ചു പെൺകുട്ടിയെ. വെളിച്ചം അവളെ കുത്തിനോവിക്കുന്നു എന്നു തോന്നുന്നു. അവളുടെ ശബ്ദം അല്പംകൂടി ഉച്ചത്തിലായിരുന്നു. കൊച്ചു പെൺകുട്ടിയെ കണ്ടപ്പോൾ തന്നെ മനസ്സിലായി വാസുദേവൻ സാർ പറഞ്ഞത് ശരിയാണ്. അവളെ ഒന്നെടുത്ത് താലോലിക്കുവാൻ ആർക്കും തോന്നും. വാസുദേവൻ സാർ അവളെ പിടിച്ചുയർത്താൻ ശ്രമിച്ചു. പക്ഷേ ബലമായി അവൾ കണ്ണുകൾ ഇറുക്കിയിടച്ച് ഉച്ചത്തിൽ കരയാൻ തുടങ്ങി. അവളുടെ ദയനീയാവസ്ഥ കണ്ടിട്ട് എന്നോണം ഒരു നിമിഷം പോലും അവർ പിന്നെ ആ മുറിയിൽ നിന്നില്ല. ഇറങ്ങിയപ്പോൾ അകത്ത് ഒരു പെൺകുട്ടിയുടെ ശബ്ദം. 'അവർ ആ അസത്തിനെ ഉണർത്തി എല്ലാരുമും തോളത്തുവച്ച് നടന്നപ്പോൾ ആരറിഞ്ഞു ഇത് ഒരു ഭ്രാന്തായി മാറും എന്ന്' മനസ്സിലായി മൈമിലി. മീനാക്ഷിയുടെ ചേച്ചി. അവളുടെ ഉള്ളിൽ ക്രൂരതയുടെ പാവക്കൂത്തു നടക്കുന്നുവെന്ന് വ്യസനസമേതം മനസ്സിലാക്കി ഭാരമേറിയ ഹൃദയവുമായി അവരിരുവരും ഇല്ലത്തേക്കു തിരിച്ചുപോന്നു. ദിവസങ്ങൾ കടന്നുപോയി. ദിനേശ് ജാമ്യത്തിലിറങ്ങി. ഇനി അയാൾക്ക് ദിവസം പോലീസ് സ്റ്റേഷനിൽ ചെന്ന് ഒപ്പിട്ടാൽ മാത്രം മതി. ഒരിക്കൽ യാദൃശ്ചികമായി ദിനേശിനെ കണ്ടുമുട്ടാൻ ഇടയായി. കാണാൻ എത്ര മാന്യൻ എന്നാൽ ഒന്നുമറിയാത്ത നിഷ്കളങ്കയായ ഒരു കൊച്ചുകുഞ്ഞിനെ ജീവിതം ഒരു കൊടുങ്കാറ്റ് എന്നവണ്ണം തകർത്തെറിഞ്ഞ എത്ര ക്രൂരൻ. ഈശ്വരൻ എന്നിട്ടും അവനെ വാഴ്ത്തുന്നുവോ. മനുവിന്റെ മനം ദിനേശിനോടുള്ള രോഷത്താൽ തീളച്ചുമറിഞ്ഞു. വളരെ വൈകാതെ അവരെത്തേടി ഒരു വാർത്തയെത്തി. മീനാക്ഷിയുടെ പേരിൽ വിവാഹം മുടങ്ങി നിന്ന മൈമിലിയുടെ വിവാഹം മംഗളമായി നടന്നു. വരൻ ദിനേശ്.

എങ്ങനെ ഇവർക്ക് സാധിച്ചു സംശയിക്കേണ്ട കാര്യമുണ്ടായിരുന്നില്ല. അന്ന് കണ്ട ആ വീട്ടിലെ സാഹചര്യം മനുവിനെ എല്ലാം വ്യക്തമാക്കി കൊടുത്തു. മീനാക്ഷിയെ വീണ്ടും വീണ്ടും കാണാനുള്ള അവസരം മനുവിനു ലഭിച്ചു കൊണ്ടിരുന്നു. മണിയമ്മ തീർത്തും അവളെ ഉപേക്ഷിച്ചു കഴിഞ്ഞിരുന്നു. സങ്കടകരമായ അവസ്ഥയുടെ ആക്കം കുറയ്ക്കുവാനായി പോലും മീനാക്ഷിയുടെ അവസ്ഥയ്ക്ക് മാറ്റം ഉണ്ടായില്ല. ആ കുടുംബത്തെ വെറുതെ വിടാൻ ആയി കാലം തീരുമാനിച്ചിട്ടില്ല എന്ന് വീണ്ടും എല്ലാവർക്കും ബോധ്യപ്പെട്ടു ഇനി ഒരിറ്റു വെള്ളം അവൾക്ക് കൊടുക്കാൻ മണിയമ്മ പോലും അവൾക്കരികിൽ ഉണ്ടാവില്ല അവർ ഭർത്താവുമായി തെറ്റിപ്പിരിഞ്ഞ് മകളുടെയും ഭർത്താവിന്റെയും അടുത്തേക്ക് മടങ്ങി. പിന്നീട് അവിടെ നടന്നതെല്ലാം ഹൃദയം പിളർക്കുന്ന അനുഭവങ്ങളായിരുന്നു. സ്വബോധത്തോടെ അച്ഛൻ മുന്നിൽ വച്ച് ആ പെൺകുഞ്ഞിനെ കാഴ്ചവസ്തുവാക്കാൻ ആളുകൾ മടിച്ചില്ല. ദിവസങ്ങൾ അങ്ങനെ കടന്നുപോയി. ഒരു തണുത്ത പ്രഭാതത്തിൽ ആ ഞെട്ടിക്കുന്ന വാർത്ത മനുവിന്റെ കാതുകളിൽ എത്തി. മീനാക്ഷി അവൾ ഇനി ഓർമ്മ മാത്രമാണ് ജന്മംനൽകിയ പിതാവ് തന്നെ അവളിലെ ജീവന്റെ തുടിപ്പിനെ പറഞ്ഞയച്ചിരിക്കുന്നു. ശരീരം ആകെ തരിച്ച് കുറെ സമയത്തേക്ക് മനു ചാവടിയുടെ പടിവാതിലിൽ നിന്നു. അദ്ദേഹത്തെ സമാധാനിപ്പിച്ച് ഉമ്മറത്തെ ചാറുകസേരയിൽ ഇരുത്തിയിട്ട് ഇറങ്ങി നടന്നു. പാടത്തിന്റെ വക്കത്തെയെത്തിയ മനു കാക്കി കുപ്പായം കണ്ട് ഒരു നിമിഷം നിന്നു. അതാ മീനാക്ഷിയുടെ അച്ഛൻ അവർക്ക് നടുവിലൂടെ നടന്നുവരുന്നു. മനുവിനെ കണ്ട് അയാൾ നിന്നു. 'അവളെ ഈശ്വരനരികിലെ നല്ല സ്ഥാനത്തേക്ക് ആണ് ഞാൻ പറഞ്ഞത്. ഇനി എന്റെ കുഞ്ഞ് ഒരു ഒരുവിധ ദുഃഖവും അറിയില്ല. അവൾക്കിനി സുഖമായി ഉറങ്ങാം. ഇന്ന് ഞാൻ ഇത് ചെയ്തില്ലെങ്കിൽ നാളെ നാട്ടുകാർ കൊല്ലാതെ കൊല്ലും അതിനുമാത്രം പാവം ഒന്നും ചെയ്തിട്ടില്ല. എനിக்கும் പോകണം അവളുടെ അരികിലേക്ക്. എന്റെ മീനാക്ഷിയുടെ അടുത്തേക്ക്.'

‘സമയം വൈകി ഞങ്ങളുടെ ഡ്യൂട്ടി ചെയ്യാൻ അനുവദിക്കുക സാർ’ നല്ലവനായ പോലീസുകാരുടെ വാക്കുകൾ

പ്രിയപ്പെട്ട ഡയറി ഞാൻ തേടി വന്നത് എന്നെന്നേക്കുമായി അവസാനിച്ചു ഇനിയും ഒരു നിമിഷം പോലും എനിക്ക് ഇവിടെ നിൽക്കാൻ ആവില്ല. ഞാൻ നാളെ തന്നെ മടങ്ങുന്നു. സാറിനോട് യാത്ര പറഞ്ഞിറങ്ങി. ഒരിക്കലും ജീവിതത്തിൽ മറക്കാൻ കഴിയാത്ത വ്യക്തി. അദ്ദേഹത്തോട് യാത്ര പറഞ്ഞു തിരികെ പോകാൻ മനസ്സ് അനുവദിച്ചില്ല. എങ്കിലും മനസ്സിനെ പിടിച്ചു വലിച്ച് കൊണ്ട് പടിപ്പുര ഇറങ്ങി നടന്നു. ഇങ്ങോട്ട് വന്ന വഴി കണ്ട ഭ്രാന്തൻ ഉറക്കെ പാടുകയാണ്..ആ കവിത വന്നു തറച്ചത് മനുവിന്റെ ഹൃദയത്തിൽ ആയിരുന്നു.

“ഏലേലം പാടത്ത് എറിഞ്ഞോരു വിത്തെല്ലാം
 ഏതോ കിളിക്കൂട്ടം കൊണ്ടുപോയി
 ഏനുമെൻ ചിരുതയും കളിയാട്ടാൻ ചെന്നപ്പോൾ
 കിളിക്കൂട്ടം വന്നെൻറെ ചിരുതേനെ കൊണ്ടോയി
 കിളിക്കൂട്ടം ചിരുതേനെ അഴിക്കൂട്ടിലടയ്ക്കും
 വിലചൊല്ലി പലർക്കായി പകുത്ത് കൊടുക്കും
 പുഴുക്കുത്ത് പിടിച്ചോരു പഴം പോലെ ഒടുക്കം
 വലിച്ചെങ്ങോയെറിഞ്ഞാലും അഴിക്കൂട്ടിൽ പിടയ്ക്കും”

ആ കവിത മനുവിൻറെ ഉള്ളിൽ പ്രതിധ്വനിച്ചു കൊണ്ടേയിരുന്നു.

Parvathy S Kumar
 D/o Shri. M.P.Sreekumar
 O/o GMT, Kottayam.

हिंदी - अंग्रेजी पदों का ठीक प्रयोग

Current – चालू	Current account – चालू खाता	Current business- चालू कामकाज
Conference – सम्मेलन	Congress – महासभा / कांग्रेस	Council - परिषद्
Existing liability- विद्यमान दायित्व	Existing – विद्यमान	Existing facts – विद्यमान तथ्य
Expert – विशेषज्ञ	Licence - अनुज्ञप्ति (लाइसेंस)	Permit - अनुज्ञापत्र (परमिट)
Prevailing – सर्वाधिक प्रचलित	Prevalent – प्रचलित , चलनसार	Proficient - प्रवीण
Skilled- कुशल	Session - सत्र / अधिवेशन	Premises- परिसर

केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिंदी शिक्षण योजना के अधीन कार्यालयीन काम हिंदी में करने के लिए कार्यासाधक ज्ञान देने के लिए प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण दे रहे हैं।

हिंदी पढ़ना और लिखना आसान है।
 तैरना तैरने सी आता है।
 हिंदी में काम करना शुरू कीजिए।



पैरालम्पिक खेल



श्रीमती.के एस.गीता
कार्यालय अधीक्षक

पैरालम्पिक खेल एक प्रमुख अन्तरराष्ट्रीय बहु-खेल प्रतियोगिता है जिसमें विभिन्न प्रकार की विकलांगता से ग्रस्त व्यक्ति भाग लेते हैं। पैरालम्पिक्स 1948 में ब्रिटिश द्वितीय विश्व युद्ध के दिग्गजों की एक छोटी सभा से उभरा है जो 21वीं सदी के आरम्भ में सबसे बड़ी अन्तरराष्ट्रीय खेल आयोजनों में से एक बन गया है। पैरालम्पिक्स 400 एथलीटों से 1960 में 23 देशों से विकलांगता के साथ लन्दन 2012 खेलों में 100 से अधिक देशों के हजारों प्रतियोगियों के लिए उभरा है। पैरालम्पियन गैर-अक्षम ओलम्पिक एथलीटों के साथ समान उपचार के लिए प्रयास करते हैं, लेकिन ओलम्पिक के बीच एक बड़ा धनराशि अन्तर है और पैरालीम्पिक एथलीटों में।

पैरालम्पिक खेलों को ओलम्पिक खेलों के समानांतर में व्यवस्थित किया जाता है, जबकि आईओसी-मान्यता प्राप्त विशेष ओलम्पिक विश्व खेलों में बौद्धिक विकलांगता वाले एथलीट शामिल होते हैं, और डेफ्लम्पिक्स में बहरे एथलीट शामिल होते हैं।

पैरालीम्पिक एथलीटों की विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं को देखते हुए, एथलीट प्रतिस्पर्धा करने वाली कई श्रेणियां हैं। स्वीकार्य विकलांगता दस योग्य हानि प्रकारों में विभाजित हो जाती है। श्रेणियां खराब माँसपेशी शक्ति, आन्दोलन की निष्क्रिय सीमा, अंग की कमी, पैर की लम्बाई अन्तर, लघु स्तर, हाइपरटोनिया, एटैक्सिया, एथेटोसिस, दृष्टि विकार और बौद्धिक हानि हैं।

पैरालम्पिक गेम्स एथलीटों की एक बड़ी अन्तरराष्ट्रीय मल्टी-स्पोर्ट इवेंट है जिसमें असुविधाजनक माँसपेशियों की शक्ति, अंग की कमी, पैर लम्बाई अन्तर, लघु स्तर, हाइपरटोनिया, एटैक्सिया, एथेटोसिस, दृष्टि विकार और बौद्धिक हानि आदि से ग्रस्त व्यक्ति खेलों में भाग ले सकते हैं। इसमें शीतकालीन और सम्मर पैरालम्पिक गेम्स हैं, जो 1988 के ग्रीष्मकालीन खेलों में सियोल, दक्षिण कोरिया के बाद से सम्बन्धित ओलम्पिक खेलों के तुरन्त बाद आयोजित किए जाते हैं। सभी पैरालम्पिक गेम्स अन्तरराष्ट्रीय पैरालैम्पिक कमेटी (आईपीसी) द्वारा शासित होते हैं।

भारत को पहला व्यक्तिगत स्वर्ण पदक 1972 के खेल में जीता । मुरलीकांत पेटकार ने 50 मीटर फ्रीस्टाइल में वर्ल्ड रिकार्ड समय में जीता । 1984 में पुरुषों की शोट पुट में जोगिंदर सिंह बेडी ने रजत(सिल्वर) पदक जीता। इसके अलावा उन्होंने टिस्कस और जावलिन त्रों में भी कांस्य (ब्रॉन्स) पदक भी पाकर भारत के पहला मल्टी पदक विजेता बन गए। 2004 के खेल में देवेन्द्र जयहारिया को जावलिन त्रों में स्वर्ण पदक और रजिंदर सिंह राहेलु 56 किलो वर्ग में पावरलिफ्टिंग में जीता।

भारत टोक्यो पैरालिंपिक में पांच स्वर्ण, आठ रजत और छह कांस्य पदक के साथ कुल 19 पदकों जीतने में सफल हुआ है। यह पैरालंपिक खेलों में भारत के लिए अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन था। 2016 के रियो पैरालिंपिक खेलों में भारत ने चार पदक जीते थे, लेकिन इसके करीब पांच गुने पदक भारतीय खिलाड़ियों ने टोक्यो पैरालिंपिक खेलों में पाए। भारत के दो एथलीट ऐसे रहे हैं, जिन्होंने दो-दो पदक अपने नाम किए हैं। इनमें शूटर अरवि लेखरा हैं, जिन्होंने निशानेबाजी की अलग-अलग प्रतियोगिताओं में गोल्ड और ब्रांज मेडल जीता है, जबकि पुरुष निशानेबाज सिंघराज अधाना ने भी दो पदक अपने नाम किए हैं, जिनमें एक सिल्वर मेडल और एक ब्रांज मेडल शामिल है। अरवि के अलावा सुमित अंतिल, मनीष नरवाल, प्रमोद भगत और कृष्णा नगर ने गोल्ड मेडल जीता है। 2016 खेल में दीपा मालिक शोट पुट में रजत पदक मिलनेवाला भारत के प्रथम वनिता बन गईं।

19 मेडल के साथ भारत टोक्यो पैरालंपिक की पदक तालिका में 24वें स्थान पर रहा है। बता दें कि, भारत की ओर से 9 अलग अलग स्पोर्ट्स इवेंट्स में 54 पैरा-एथलीटों ने यहां हिस्सा लिया। पैरालंपिक खेलों में ये अब तक का भारत का सबसे बड़ा था।

भारत के लिए सबसे पहला गोल्ड मेडल अवनि लेखरा ने महिलाओं के 10 मीटर एयर राइफल शूटिंग मुकाबले में जीता था। इसके बाद सुमित एंटिल ने भारत को जेवलीन थ्रो में दूसरा गोल्ड मेडल दिलाया। मनीष नरवाल ने 50 मीटर पिस्टल शूटिंग इवेंट में तीसरा तो प्रमोद भगत ने बैडमिंटन में देश के लिए चौथा गोल्ड मेडल जीता। इसके बाद आखिरी दिन एक बार फिर बैडमिंटन में कृष्णा नागर ने टोक्यो पैरालंपिक खेलों में भारत के गोल्ड मेडल की संख्या 5 कर दी।

सिल्वर मेडल की बात करें तो भारत को सबसे ज्यादा 5 मेडल एथलेटिक्स में मिलें। इसके अलावा टेबल टेनिस और शूटिंग में भारत ने एक-एक सिल्वर मेडल हासिल किया। जबकि आज सुहास यथिराज ने बैडमिंटन में भारत के लिए इन पैरालंपिक खेलों का आठवां सिल्वर मेडल हासिल किया। भारत के लिए टेबल टेनिस में भाविना पटेल, निषाद कुमार ने हाई जंप और योगेश कथुनिया ने डिस्कस थ्रो में सिल्वर मेडल जीता। इसके अलावा देवेन्द्र झाझरिया ने जेवलीन थ्रो और मरियप्पन थंगावेलू एवं प्रवीण कुमार दोनों ने हाई जंप में सिल्वर मेडल जीता। साथ ही शूटिंग में 50 मीटर एयर पिस्टल इवेंट में सिंहराज अडाना ने देश को सिल्वर मेडल दिलाया।

वहीं अगर ब्रॉन्ज मेडल की बात करें तो भारत ने इन खेलों में 6 ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किए। जिनमें से दो मेडल शूटिंग, दो मेडल एथलेटिक्स और तीरंदाजी के साथ साथ बैडमिंटन में एक एक ब्रॉन्ज मेडल हासिल हुआ। भारत के लिए सुंदर सिंह गुर्जर ने जेवलीन थ्रो, सिंहराज अडाना ने शूटिंग, शरद कुमार ने हाई जंप, अवनि लेखरा ने शूटिंग, हर विंदर सिंह ने तीरंदाजी और मनोज सरकार ने बैडमिंटन में ये ब्रॉन्ज मेडल जीते। अवनि लेखरा और सिंहराज अडाना ने इन पैरालंपिक खेलों में दो दो मेडल जीत दोहरी सफलता हासिल की।



संविधान की अष्टम अनुसूची

Eighth Schedule of The Constitution

संविधान की अष्टम अनुसूची में कुछ भारतीय भाषाओं को राष्ट्रभाषा के रूप में अंगीकार हैं।

पहले -14 भाषाओं को अंगीकार

1967 में सिंधी भाषा

1992 में कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली

2003 में बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली

कुल अभी 22 भाषाओं को अंगीकार है।

मेरी प्यारी बेटी



पहली बार देखा मुझे
नन्ही बेटी विस्मय के साथ ।
नाम रखा प्यारी को 'विस्मया'
सीमा न रहा उसकी प्यार की ।
भय्या को भी बहुत प्यार था उसको
एक पल भी अलग नहीं सकता ।
पढती थी खूब और पास की डिग्री
बन गया डॉक्टर आयुर्वेद का ।
शादी भी मनाया धूम धाम से
प्यारे अपने बड़े भाई की ।
भाभी भी आयी घर में
बहन ही थी प्यार में भाभी ।
एक दिन बेटी से बोला, आयेगा कल
देखने तुमको शादी के लिए ।
कहा मेरी बेटी, पढना है मुझे
शादी करूँगी उसके बाद ।
बोले पिताजी, आने दो
न पसंद आये तो न होगी शादी ।
आया कल सुन्दर युवक
मुग्ध हो गया बेटी उसके मुस्कान पर ।
वह बोला, चाहिए केवल लक्ष्मी जैसी
बेटी को, भर गया आँखें और मन खुशी से ।

त्योहार थे विवाह वास्तव में
दिया उसको सोना, गाडी और भूमी भी ।
शुरू की जीवन प्यार एवं खुशी के साथ
आगे दिनों में समझा देव नहीं राक्षस है पतिदेव ।

शुरू की झगडा, बडी गाडी और जमीन के लिए
मारने लगा पीकर शराब हर दिन ।
कुछ नहीं बताया हमको, छिपा दिया
पानी आँखों का और बोला खुशी है बहुत उसको ।
मित्र को कहा था सबकुछ और वचन लेकर
कि न बोलना पिता और भाई को उसका दर्द ।
सुबह आया फोन ससुराल से उसके
खुदकुशी की तेरी बेटी ने ।
हो गया मैंने जीवनमृत
मार दिया मेरी बेटी को दहेज के लिए ।
धन के लिए राक्षस बनता है नर
कभी न देना बेटी को कोई लालची को ।
उसको पढने दो और खडे दो अपने पैरों पर
व्याह कर दो केवल उसको चाहने वालों को।

श्री.एम.पी.श्रीकुमार,
महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय
कोट्टयम

इंसान को उसकी इंसानियत सो दूर रखनेवाली कई सीमाएं हमने अपने चारों ओर खींच रही हैं। उन में से केवल ऊपरी तौर पर दिखनेवालों के बारे में, मैं ने शीर्षक में जिक्र किया है। हम और आप जिस देश के निवासी हैं उस देश की सरकार के लिए अपने मन में देशभक्ति की भावना को सुदृढ़ करने के लिए ' देश ' की सीमा अत्यंत आवश्यक है। जो इससे ऊपर उठकर एक ग्लोबल इंसान की तरह बातें करे उसे देशद्रोही का छाप अक्सर लग जाता है। इंसान को इंसान के खटाकर दुश्मन का जामा पहनाकर गोली मारने के लिए जब सिखाया जाता है तो हर किसी का हाथ कांप जाता है। जब आपके अंदर नफरत का तेजाब न भरा जाए तो कोई भी इंसान दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचा पाता है। देशभक्ति एक अच्छी एवं सच्ची भावना है परंतु जन वह हद से ज़्यादा हम पर हावी हो जाती है तो वह तेज़ाब का काम कर जाती है। हर भावना जो हद से ज़्यादा हम पर हावी होती है वह हमारे और आसपास के लोगों को नुकसान करने का काम करती है। देश के सीमाओं के दायरे से उठकर जीने पर हमें यह अहसास होता है कि हम भी अपने पड़ोसी देश के नागरिक की तरह रोज़ी रोटी के लिए भटकनेवालों में ही

हैं। प्रवासी जीवन में ऐसे कई अच्छे और सच्चे मित्र मिलते हैं जो हमें ऐसे विद्वेष से उभरने में सहायता देते हैं। एक राज्य से दूसरे राज्य में काम के लिए जानेवालों का अनुभव ही लिया जाए तो हमें पता चलेगा हर प्रान्त के लोगों में मिल-जुलकर जीने का मज़ा।

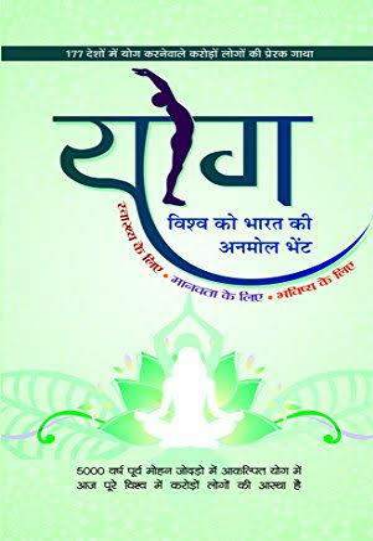
हमारा देश भाषा के उपयोग के अनुसार ही कई राज्यों में बांटा गया । हालांकि हिंदी को राजकाज की भाषा का दर्जा मिला है। हमारे देश में कई राज्य ऐसे हैं कि जहाँ हिंदी की जानकारी से ही काम नहीं चलाया जा सकता है। बाहर के कई देशों में देखा जाए तो वहाँ पढ़ने जाने से लेकर काम करना हो तो उनकी राष्ट्रभाषा की जानकारी अत्यंत अनिवार्य है। हमारे देश में यह नहीं कहा जा सकता है। जिस राज्य में रहने का इरादा हो वहाँ की भाषा सीखना मज़बूरी बन जाती है। इस भाषा की सीमा के बारे में कहा जाए तो कई राज्यों की अपने पड़ोसी राज्य से भाषा की बजह से नहीं लेकिन 'पानी' से जोड़ा जा सकता है। नदियाँ तो प्रकृति का वरदान हैं उसे बाँधकर उसका उपयोग किया जाता है। इस कारण राज्यों की सीमाएं काटकर बहती नदी के विषय में तर्क शुरू हो जाता है। भाषा की सीमा

कृषि केलिए पानी ज़रूरी है जिन जगहों में लोग खेती पर निर्भर करते हैं उन्हें ही यह समझ आता है। भाषा की सीमा से बंधा इन्सान अपने पड़ोसी की प्यासी को अनदेखा कर देता है। कृषि केलिए पानी ज़रूरी है जिन जगहों में लोग खेती पर निर्भर करते हैं उन्हें ही यह समझ आता है। भाषा की सीमा ने भी इंसान को इन्सान का दुश्मन बनाया है। हमारे देश में परंतु काम की तलाश में जगह-जगह भटकने पर मज़बूर इन्सान को सब भाषा प्यारी हो जाती है।

धर्म वह बीज है जो हम पैदा होते ही हर बच्चे के मन में बो देते हैं। उस बच्चे को देख-परख कर अपनी धर्म चुनने का हक अक्सर न के बराबर होता है। ऐसे बहुत कम इन्सानों को अपने देश में देखा है जो खुद की समझ के अनुसार अपना धर्म बदलते हैं। अगर आज के भारत की स्थिति को देखा जाए तो यह एक बहुत ही नाजुक मसला है। धर्म की दीवार से बंधा व्यक्ति अपने आपकी सोच इस कदर संकुचित कर लेता है कि अपने धर्म को मानने वालों के सिवाय सभी को वह अधर्मी कहता है। भगवान की पूजा के तरीकों में जो अंतर है उससे हम इन्सान की इन्सानियत का नाप नहीं ले सकते हैं। कर्म के अच्छे या बुरे होने से ही ऊपरवाले के

खाते में हमारे खजाने भरे जा सकते हैं। उस समय जो हम कई तरह की सीमाओं में बढकर एक दूसरे के गले पर चाकू रखने का काम करते हैं, वह हमारे बुरे कर्मों के खाते में ही डाला जाएगा। कई बार मैं ने महसूस किया है कि जानवर इन्सान से भी ज्यादा इन्सानियत रखता है। कई मामलों में कुत्तों ने कूड़े दान में फेंक गए बच्चियों को बचाया हैं। आज जो स्त्रियों और बच्चियों पर हैवानी आक्रमण देखा जा रहा है, उससे लगता है कि ऐसी सीमाओं का क्या अर्थ है जो इन्सान को हैवान बनने से रोक नहीं पाता है। धन संपदा से भरपूर आदमी देश, राज्य और धर्म की सीमाएं नकार कर या फिर उन सीमाओं की बेदिशों से ऊपर उठकर धन इक्कट्टा कर ही लेता है। छोटी सोच रखनेवाले अपने आपको ऐसी बेदिशों से बांधकर अपने धन अर्जित करने की सीमाएं सीमित कर लेता है। काश कि हम अपने आपको इस कदर ऊपर उठा पाते कि इन भावनाओं की सीमाओं को लॉगकर एक सच्चे इंसान की इंसानियत निभा लेते ।

श्रीमती. डेय्सी थॉमस,
श्री थॉमस. के. के की पत्नी
महा प्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय
कोट्टयम

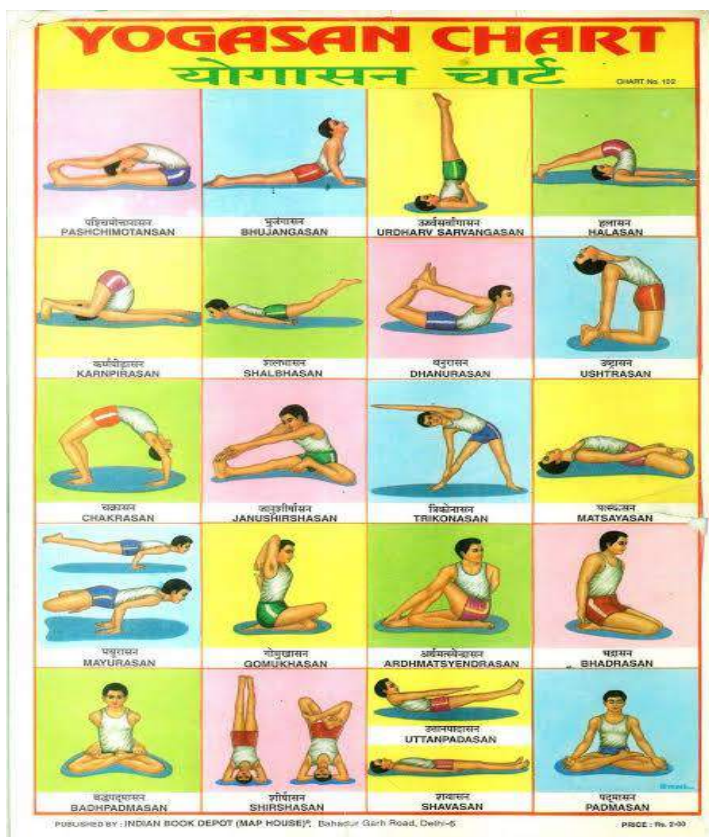


योग सेहत मंद जीवन केलिए बहुत ज़रूरी माना जाता है! और हो भी क्यों न आखिर योग के फायदे ही इतने हैं, योग शुगर, कब्ज जैसी बीमारियों को लडने में भी मदद करता है, योग और ध्यान मन की शांति और बोहतर सेहत केलिए ज़रूरी माना जाता है। अक्सर लोग सोचे बैठते हैं कि योग केवल शरीर को लचीला बनाने केलिए ही किया जाता है। लेकिन ऐसा नहीं है। योग के ढेरों आसन हे जिनके कई फायदे हैं, योग की सहायता से आप



जीवनभर जवान और स्वस्थ बने रह सकते हैं। अक्सर लोग योग को एक धीमा माध्यम मान लेते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है, योग आपको तंदुरुस्त रहने में कई तरह से मदद कर सकता है। जानिए क्या हैं, योग के फायदे -

1. मन रहेगा शांत - योग से माँसपेशियों का अच्छा व्यायाम होते हैं। लेकिन चिकित्सा शोधों ने ये साबित कर दिया है कि योग शारीरिक और मानसिक रूप से वरदान है। योग से तनाव दूर होता है और अच्छा नींद आती है। सुख अच्छी लगती है, इतना ही नहीं पाचन भी सही रहता है।



2. तन और मन का व्यायाम - अगर आप जिम जाते हैं तो यह शरीर को तो तंदुरुस्त रखेगा, लेकिन मन का क्या वहीं अगर आप योग का सहारा लेते हैं, तो यह आपके तन के साथ ही साथ मन और मस्तिष्क को भी तंदुरुस्त करेगा।

3. दूर भागेंगे रोग - योगाभ्यास से आप रोगों से भी मुक्ति पा सकते हैं, योग से रोगों से लडने की शक्ति बढ़ती है।

4. वजन नियंत्रण - योग मांस पोशियों को पुष्ट करता है और शरीर को तंदुरुस्त बनाता है।

5. ब्लड शुगर लेवल करें नियंत्रित - योगों से आप अपने ब्लड शुगर लेवल को भी नियंत्रित करता है और बढे हुए ब्लड शुगर लेवल को घटता है। डायबटिस रोगियों केलिए योग बेहद फायदेमंद हैं। योगों से रोगों से लडने की शक्ति बढ़ती है। योग से शरीर स्वस्थ और नीरोग बनता है।

श्रीमती अनिता के
उपमहाप्रबंधक(वित्त)
कोट्टयम बीए

स्वामी विवेकानंद

वर्तमान में भारत के युवा जिस महापुरुष के विचारों को आदर्श मानकर उससे प्रेरित होते हैं, युवाओं के वे मार्गदर्शक और भारतीय गौरव हैं स्वामी विवेकानंद। भारत की गरिमा को वैश्विक स्तर पर सम्मान के साथ बरकरार रखने के लिए स्वामी विवेकानंद के कई उदाहरण इतिहास में मिलते हैं।



स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 को हुआ। उनका घर का नाम नरेंद्र दत्त था। उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे। वे अपने पुत्र नरेंद्र को भी अंगरेजी पढ़ाकर पाश्चात्य सभ्यता के ढंग पर ही चलाना चाहते थे। नरेंद्र की बुद्धि बचपन से बड़ी तीव्र थी और परमात्मा को पाने की लालसा भी प्रबल थी। इस हेतु वे पहले ब्रह्म समाज में गए किंतु वहां उनके चित्त को संतोष नहीं हुआ।

सन् 1884 में श्री विश्वनाथ दत्त की मृत्यु हो गई। घर का भार नरेंद्र पर पड़ा। घर की दशा बहुत खराब थी। कुशल यही थी कि नरेंद्र का विवाह नहीं हुआ था। अत्यंत गरीबी में भी नरेंद्र बड़े अतिथि-सेवी थे। स्वयं भूखे रहकर अतिथि को भोजन कराते, स्वयं बाहर वर्षा में रातभर भीगते-ठिठुरते पड़े रहते और अतिथि को अपने बिस्तर पर सुला देते।

रामकृष्ण परमहंस की प्रशंसा सुनकर नरेंद्र उनके पास पहले तो तर्क करने के विचार से ही गए थे किंतु परमहंसजी ने देखते ही पहचान लिया कि ये तो वही शिष्य है जिसका उन्हें कई दिनों से इंतजार है। परमहंसजी की कृपा से इनको आत्म-साक्षात्कार हुआ फलस्वरूप नरेंद्र परमहंसजी के शिष्यों में प्रमुख हो गए। संन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद हुआ।

स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन अपने गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे। गुरुदेव के शरीर-त्याग के दिनों में अपने घर और कुटुम्ब की नाजुक हालत की परवाह किए बिना, स्वयं के भोजन की परवाह किए बिना गुरु सेवा में सतत हाजिर रहे। गुरुदेव का शरीर अत्यंत रुग्ण हो गया था। कैंसर के कारण गले में से थूक, रक्त, कफ आदि निकलता था। इन सबकी सफाई वे खूब ध्यान से करते थे।

एक बार किसी ने गुरुदेव की सेवा में घृणा और लापरवाही दिखाई तथा घृणा से नाक भौंहें सिकोड़ीं। यह देखकर विवेकानन्द को गुस्सा आ गया। उस गुरुभाई को पाठ पढ़ाते हुए और गुरुदेव की प्रत्येक

वस्तु के प्रति प्रेम दर्शाते हुए उनके बिस्तर के पास रक्त, कफ आदि से भरी थूकदानी उठाकर पूरी पी गए।

गुरु के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही वे अपने गुरु के शरीर और उनके दिव्यतम आदर्शों की उत्तम सेवा कर सके। गुरुदेव को वे समझ सके, स्वयं के अस्तित्व को गुरुदेव के स्वरूप में विलीन कर सके। समग्र विश्व में भारत के अमूल्य आध्यात्मिक खजाने की महक फैला सके। उनके इस महान व्यक्तित्व की नींव में थी ऐसी गुरुभक्ति, गुरुसेवा और गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा।

25 वर्ष की अवस्था में नरेंद्र दत्त ने गेरुआ वस्त्र पहन लिए। तत्पश्चात उन्होंने पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा की।

सन् 1893 में शिकागो (अमेरिका) में विश्व धर्म परिषद् हो रही थी। स्वामी विवेकानंदजी उसमें भारत के प्रतिनिधि के रूप से पहुंचे। योरप-अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। वहां लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानंद को सर्वधर्म परिषद् में बोलने का समय ही न मिले। एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला किंतु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए।

फिर तो अमेरिका में उनका बहुत स्वागत हुआ। वहां इनके भक्तों का एक बड़ा समुदाय हो गया। तीन वर्ष तक वे अमेरिका रहे और वहाँ के लोगों को भारतीय तत्वज्ञान की अद्भुत ज्योति प्रदान करते रहे।

'अध्यात्म-विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जाएगा' यह स्वामी विवेकानंदजी का दृढ़ विश्वास था। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएं स्थापित कीं। अनेक अमेरिकन विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया।

4 जुलाई सन् 1902 को उन्होंने देह त्याग किया। वे सदा अपने को गरीबों का सेवक कहते थे। भारत के गौरव को देश-देशांतरों में उज्ज्वल करने का उन्होंने सदा प्रयत्न किया।

कृपया ध्यान दिजिए

शब्द	मलयालम अर्थ	हिंदी अर्थ
1. अवकाश	അവധിക്കാരം	leave/leisure
2. आलोचना	ചിന്ത	criticism
3. क्षेत्र	ക്ഷേത്രം	area
4. प्रबंध	ഉപന്യാസം	arrangement
5. प्रयास	പ്രയാസം	effort

माता की आशा

अंग्रेजों के गुलाम रहे
बहुत साल सिर चुके
लड़ रहे दिन-रात
अहिंसा नारा मुड़ी में रखे।
वीर पुत्रों के बलिदान से
आज़ादी का अमृत मिला।
अमृत में डाला था विष
बटवारा का कालकूट विष।
मानव बने स्वार्थ
बाँटा निर्दय राज की नीति
माता का आँचल चीर कर
आज़ादी का अमृत पाया।
पाया तो कुछ नहीं
खो गया सब कुछ
चोट लगी माता के मन में
जिसका दर्द आज भी बाकी
बीत चुकी है पच्चहत्तर वर्ष
पर चलती है यह नफ़रत की यात्रा
आशा है.....
सब चलेंगे हाथ पिरोकर
प्यार भरे दिलों से
ले लेंगे आज़ादी का अमृत कुंभ ।

गीता जी पी

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



राजभाषा कार्यान्वयन के लिए विविध समितियाँ

1. माननीय संसदीय राजभाषा समिति- 30 सदस्य (20 लोक सभा से और 10 राज्य सभा से)
अध्यक्ष - गृहमंत्री
2. केंद्रीय हिंदी समिति - अध्यक्ष- प्रधान मंत्री
3. हिंदी सलाहकार समिति- अध्यक्ष - प्रत्येक मंत्रालय के मंत्री
4. राजभाषा कार्यान्वयन समिति- अध्यक्ष - कार्यालय प्रमुख
5. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति - अध्यक्ष - संयोजक के रूप में करनेवाले कार्यालय के प्रमुख



ചിത്രശലഭം

മധുവുണ്ണാൻ പൂ തോറും പാറുന്ന ശലഭമേ, അതിഥിയായി വരുമോ നീ എൻ ഗേഹത്തിൽ ?
വെയിലത്തും മഴയത്തും പാറിപ്പറക്കേണ്ടാ. പൊന്നുപോൽ എന്നെന്നും നോക്കീടാം ഞാൻ
ഞാൻ



പൂമ്പാറ്റ നൽകുന്നൊരുത്തരമെന്നെന്നു എൻകൂടെ ഒന്നല്ല ചിന്തിക്കുമോ?
"നരജന്മമുത്തമം അതിവിശിഷ്ടോത്തരം എങ്കിലും എൻ ജന്മമേറെയിഷ്ടം
താദാത്മ്യം ചെയ്തൊന്നു നോക്കിയാൽ അവുണ്ണ തന്നെ നിസ്സംശയം ബോധ്യമാകും
അതിനായി പത്തു കാര്യങ്ങൾ ഞാൻ ചൊല്ലീടാം ക്ഷമയോടെ എന്നെ ശ്രവിച്ചിടേണം

ചെറിയോരുദരമതു നിറച്ചീടുവാൻ പൂക്കളെ ആവോളം തീർത്തതീശൻ
പുമധുവും പൂമ്പൊടിയും നുകരുന്ന ഞങ്ങൾക്ക് ആതുരലയമതില്ല പാരിൽ
സഞ്ചരിക്കാനായി ഇന്ധനം വേണ്ടല്ലോ ഈശ്വരൻ ചിറകുകൾ തന്നതിനാൽ
എന്നാൽ മനുജനും വാനിൽ പറക്കുന്നു ഏഴാം കടൽക്കരെ എത്തിടാനായ്

തേനുണ്ണാൻ പോകുമ്പോൾ കേൾക്കാമവരുടെ മാതാപിതാക്കൾതൻ വിരഹദുഃഖം
അന്നെന്നു ജീവിക്കും ഞങ്ങൾതൻ ലോകത്തിൽ സംസാര ദുഃഖങ്ങളൊട്ടുമില്ല
എല്ലാം തരുന്നൊരു ഈശ്വരൻ തന്നിലാണാശ്രയം എന്നതുമാത്രം ബലം
ഒന്നാമതെത്താനുള്ളൊട്ടുമില്ല വേറൊന്നിലും മാത്സര്യബുദ്ധി ഇല്ല

പൂക്കളെ തേടാൻ അതിർവരമ്പുമില്ല എള്ളൊളം ഭൂമിക്കായി തർക്കമില്ല
ഭാഷയുമില്ല വഴക്കടിച്ചീടുവാൻ സൊറ പറഞ്ഞീടുവാൻ നേരമില്ല
ഇനിയെന്ത് ഭാവിയിൽ എന്നറിഞ്ഞീടുവാൻ കൈനോട്ടം മഷിനോട്ടം ഒന്നുമില്ല
തെറ്റ് ചെയ്യാനുള്ളവസരവുമില്ല സർവ്വഭാ ഈശ്വരചിന്ത മാത്രം

പൈസയും സ്വർണ്ണവും വാങ്ങിച്ചുകൂട്ടേണ്ട സമ്പത്ത് നേടാനലഞ്ഞിടേണ്ടാ
മക്കളെ പോറ്റുവാൻ ദുരത്തായ് ജോലിക്ക് കുടുംബത്തെ വിട്ടിട്ടു പോയിടേണ്ടാ
ഞങ്ങൾക്കസുയയും കോപവും ലോഭവും കപടമുഖങ്ങളുമൊന്നുമില്ല
നിർമ്മലസ്നേഹത്തിനതിരുകളുമില്ല അതിനാലെ തേനിയായ് യുദ്ധമില്ല

ആയുസ്സിൻ നല്ലൊരുഭാഗവും ജോലിക്കായി ചിലവഴിക്കുന്നു മനുഷ്യകുലം
പെറ്റവരേപ്പോലും നോക്കുവാൻ നേരമില്ല സ്നേഹമീ ഭൂവിൽ വാണീടുമോ?
നിറമേഴും ചാലിച്ച വർണ്ണാഭയിൽ മർത്ത്യമനസ്സു രസിപ്പിക്കും പൂമ്പാറ്റയെ
ആയുസ്സ് വലുതായിട്ടില്ലെങ്കിലും ആരും കുറ്റം പറഞ്ഞതില്ലെന്നവരെ "

അന്തസ്സ് കൂട്ടാനായി സമ്പന്നനാകാനായ് രാപ്പകൽ അദ്ധ്വാനിക്കുന്നു ജനം
ദൈവം മനുഷ്യനെ സരളമായി സൃഷ്ടിച്ചു സങ്കീർണ്ണ പ്രശ്നങ്ങൾ മനുഷ്യസൃഷ്ടി
അൽപായുസ്സുള്ള ശലഭത്തിൻ ജീവിതം ഇത്രയും സുന്ദരമായിരുന്നാൽ
ബുദ്ധിയും ശക്തിയും ആയുസ്സുമുള്ളൊരീ മാനുഷജന്മം സൗഭാഗ്യമല്ലോ?

ഗീതു.എൻ
ജൂനിയർ ടെലികോം ഓഫീസർ

कृपया ध्यान दीजिए ।
जनता की जानकारी के लिए प्रदर्शित करने के लिए कार्यालयों के बोर्ड तैयार करते वक्त पहले प्रादेशिक भाषा, फिर
हिंदी और बाद में अंग्रेजी का क्रम होना है।

The LGBT community .

People around the world face violence and inequality- and sometimes torture, even execution because of who they love, how they look, or who they are. Sexual orientation and gender identity are integral aspects of our selves and should never lead to discrimination or abuse.



The LGBT community use rainbow colors to indicate their way of life. Then why isn't their life as colorful and happy as their flag? This is because there are still countries that punish the LGBT community in the name of religion or tradition.

The question remains in the face of discrimination why do some communities find it hard to accept LGBT relationships more than others? To some, their opposition is more of a matter of faith as for others they view these types of relationships or lifestyles as abnormal.

Nature is filled with examples of gay animals, from swans to dolphins. It would be only logical that if these cases exist in the animal world the same phenomena would happen in the human race. A person does not choose to be gay or straight. This brings us back to the question, of sexual preferences and whether it is time that as a society we stop discriminating against others as a result of these preferences. Essentially, humans have the freedom of will and can make the choice that can be exercised. The LGBT society is not harming others.

Who are we to deny the LGBT society the right to happiness. After all, under the skin, bone, muscle, and wigs we are all the same and there is no reason for us to deny others the same freedom and rights everyone else enjoys – the right to happiness as long as we're not hurting others. Can you imagine having your choices being monitored round the clock or being discriminated against? Some countries still behave in this manner. The result: some members of the LGBT community feel persecuted and face issues of suicide.

It is time that the world wake up and help the LGBT community to be accepted. If you know someone from this community reassure them that they are your brother or sister and there are more important things in life than worrying about sexuality or a transgender.

* LGBT- Lesbian, Gay, Bisexual and Transgender.

Kum. Neelajana Anand
Class XI, SKPS, Kaduthuruthy.
(D/o Smt. Jayasree C.G., SDE OP)

स्वतंत्रता दिन - ध्वजारोपण



अंतर्राष्ट्रीय वनिता दिन

Dedication of Wi Fi internet facility to Prakkanam Tribal Settlement colony – a

joint attempt of Sree Sabareesha College of IYkya Malayaraya Mahasabha and

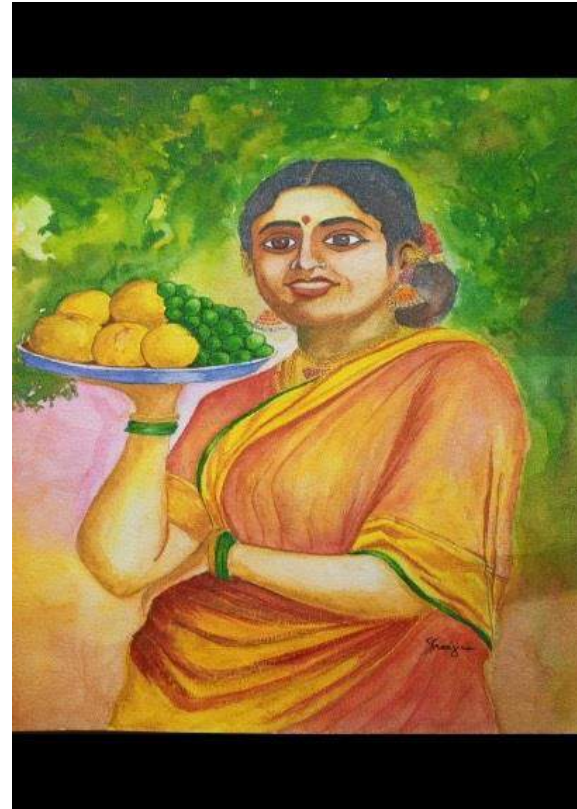
BSNL . Inauguration by Sri.G.N.Hawal, GMT, BSNL, Kottayam



Water colour painting by

Kum.Kathu, D/o Shri Shaju C S, SDE, Changanacherry.





**Some acrylic, oil pastel paintings by
Shri Shaju C S, SDE Changanacherry**



